Kali Mata Aarti

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली,
तेरे ही गुण गावें भारती, ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती। 1 |

तेरे भक्त जनों पे माता, भीर पड़ी है भारी |
दानव दल पर टूट पडो माँ, करके सहि सवारी | 2 |

सौ सौ सहिों से तु बलशाली, दस भुजाओं वाली |
दुखयिों के दुखडें नविारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती || 3 |

माँ बेटे का है इस जग में, बड़ा ही नर्मिल नाता |
पूत कपूत सूने हैं पर, माता ना सुनी कुमाता || 4 |

सब पर करुणा दरसाने वाली, अमृत बरसाने वाली |
दुखयिों के दुखडे नविारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती || 5 |

नहीं मांगते धन और दौलत, न चाँदी न सोना |
हम तो मांगे माँ तेरे मन में, इक छोटा सा कोना || 6 |

सबकी बगिडी बनाने वाली, लाज बचाने वाली |
सतयिों के सत को संवारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती || 7 |

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली |
तेरे ही गुण गायें भारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती || 8 |